

# THE ChangeMakers

January to March 2024 Issue 19

Transforming Rural Bihar

डिजिटल  
एवं  
सामाजिक  
परिवर्तन  
विशेषांक



डिजिटल और सामाजिक परिवर्तन की वाहक बनी  
जीविका की दीदियाँ

Page 01



सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और  
प्रौद्योगिकी स्तर पर परिवर्तन में जीविका की भूमिका

Page 18



The Scope of Social Transformation  
among JEEVIKA Didi

Page 03



बड़की दीदी

Page 25

## From the editor's desk

Dear Readers,

Wishing you a very Happy New Year!

As we embark on 2024, we delve into the digital evolution for reshaping the nation's socio-economic fabric. BRLPS-JEEVIKA has adopted digital transformation, AI, ML, e-platform business and open networks to usher in an era characterised by unprecedented connectivity, innovation and paradigm shifts across sectors. In this edition of "The Changemakers" we share with you our digital initiatives for effective public service delivery by scaling digital transformation, embracing local ecosystems, focusing on inclusivity and acknowledging the power of communities. Our regular features "Didi ki Kahani, Didi Ki Zubani" and "Badki Didi" would certainly inspire you and provide you with food for thought.

Gratitude for your support and Happy Reading.

Regards  
Mahua Roy Choudhury  
pc.gkm@brlp.in

### EDITORIAL TEAM

- Mrs. Mahua Roy Chaudhury  
Program Coordinator (G&KM)
- Mr. Pawan Kr. Priyadarshi  
Project Manager (Communication)

### CONTENT COMPILATION TEAM

- Mr. Biplob Sarkar  
Manager Communication
- Mr. Rajeev Ranjan  
Manager Communication, Nawada
- Mr. Bikas Kumar  
Manager Communication, Bhagalpur
- Mr. Arpan Mukherjee  
Young Professional-KMC
- Mr. Anshu Singh  
Young Professional-KMC

## संदेश



डॉ. चन्द्रशेखर सिंह (भा.प्र.से.)  
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जीविका (BRLPS)  
राज्य मिशन निदेशक, लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान

किसी भी परियोजना के सफल क्रियान्वयन एवं इसके उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि परियोजना से संबंधित सभी गतिविधियों, उपलब्धियों एवं निरंतर होने वाली प्रगति की समुचित जानकारीयों तत्काल उपलब्ध हों। इस दिशा में सार्थक प्रयास करते हुए जीविका ने परियोजना संबंधी सभी जानकारीयों एवं उपलब्धियों को संग्रहित करने हेतु अपना सूचना प्रबंधन प्रणाली (एम.आई.एस.) विकसित किया है। इससे जीविका द्वारा अब तक गठित 10 लाख से अधिक स्वयं सहायता समूहों एवं इससे जुड़े एक करोड़ से अधिक परिवारों की विस्तृत विवरणी एम.आई.एस. पर उपलब्ध है। इसके अलावा परियोजना द्वारा क्रियान्वित विभिन्न गतिविधियों को ससमय अद्यतन करने हेतु अलग-अलग एप्लीकेशन एवं मोबाइल एप विकसित किए गए हैं। सामुदायिक पेशेवरों द्वारा मोबाइल एप के माध्यम से समय पर परियोजना संबंधी कार्य एवं उपलब्धियों का संधारण किया जाता है। इससे परियोजना संबंधी कार्यों का नियमित अनुश्रवण करते हुए इसकी गुणवत्ता बेहतर करने में काफी मदद मिल रही है। यह प्रणाली न केवल पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करती है, बल्कि स्थानीय समुदायों की भागीदारी को भी बढ़ावा देती है। इस पहलकदमी का ही असर है कि परियोजना को अधिक क्रियाशील रूप से क्रियान्वित की जा रही है। आज ग्रामीण महिलाएँ इसके संधारण के लिए तकनीकी रूप से भी दक्ष हो रही हैं। समाज को विकसित बनाने की दिशा में जीविका द्वारा किये जा रहे कार्य सराहनीय हैं।

## CONTENTS

डिजिटल और सामाजिक परिवर्तन की वाहक बनी जीविका की दीदियाँ.....	01
The Scope of Social Transformation among JEEVIKA Didi.....	03
डिजिटाइजेशन से सामुदायिक संगठनों की कार्यप्रणाली में आई पारदर्शिता .....	05
सामाजिक परिवर्तन में मदद करने और प्रेरित करने के लिए विभिन्न सरकारी योजनाएँ.....	07
Empowering Livelihoods in Bihar: How MIS Dashboards Drive JEEVIKA's Success.....	10
सतत् जीविकोपार्जन योजना से सामाजिक परिवर्तन.....	13





श्री अरविन्द कुमार चौधरी (भा.प्र.से.)  
प्रधान सचिव, ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजना “जीविका” बिहार में महिलाओं के विकास, सशक्तिकरण एवं गरीबी उन्मूलन हेतु वर्ष 2007 से कार्यरत है। परिणामस्वरूप सामुदायिक संगठनों के गठन के साथ ही महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण का कार्य प्रारंभ हुआ। इन सामुदायिक संगठनों के माध्यम से ही आज महिलाएँ अपनी मूलभूत समस्याओं के समाधान को लेकर मुखर हुई हैं। साथ ही साथ विभिन्न आर्थिक क्रियाकलापों को अपनाकर वह अब आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रही हैं एवं समस्त गतिविधियों की प्रगति का लेखांकन भी कर रही है। खास बात यह है कि सामुदायिक संगठन स्तर पर सभी प्रकार के लेन-देन का संधारण वेब एप्लीकेशन एवं मोबाइल एप के माध्यम से किया जा रहा है। सूचना प्रबंधन प्रणाली (एम.आई.एस.) के माध्यम से हम योजनाओं की प्रगति को बेहतर तरीके से निगरानी कर सकते हैं और उसके प्रभावी क्रियान्वयन हेतु निर्णय भी ले सकते हैं। आज जीविका के सफल प्रयासों का ही नतीजा है कि सभी सामुदायिक संगठनों से जुड़ी तमाम जानकारीयों सूचना प्रबंधन प्रणाली (एम.आई.एस.) पर उपलब्ध हैं। इससे परियोजना संबंधी कार्यों के सफल संचालन, नियमित अनुश्रवण एवं सही निर्णय लेने में मदद मिल रही है। इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा है एवं सूचना प्रबंधन प्रणाली (एम.आई.एस.) के सहयोग से जीविका दीदियों आर्थिक विकास के नए आयाम स्थापित कर रही हैं।

## CONTENTS

The Spirit of Entrepreneurship and the Power of Enterprises in Driving Positive Social Change...	15
सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और प्रौद्योगिकी स्तर पर परिवर्तन में जीविका की भूमिका.....	18
Empowering JEEVIKA: Leveraging MIS and Digital tools for Transformation and Impact.....	20
दीदी की कहानी, दीदी की जुबानी.....	22
बड़की दीदी .....	25
मन की कलम से .....	27



01 डिजिटल और सामाजिक परिवर्तन की वाहक बनी जीविका की दीदियाँ



10 Empowering Livelihoods in Bihar:  
How MIS Dashboards Drive JEEVIKA's Success



13 सतत् जीविकोपार्जन योजना से सामाजिक परिवर्तन




20 Empowering JEEVIKA:  
Leveraging MIS and Digital tools for Transformation and Impact





# डिजिटल और सामाजिक परिवर्तन की वाहक बनी जीविका की दीदियाँ

 Pawan Kumar Priyadarshi, Project Manager-Communication

भारतीय समाज में महिलाओं का सम्मान और समाज में उनके योगदान की महत्ता बढ़ी है। हमारे समाज में महिलाओं के उत्थान और समृद्धि का सीधा संबंध उनके स्वावलंबन और समाज में उनके विभिन्न योगदान से है। इसी दिशा में बिहार के गांवों में बसी जीविका की दीदियाँ एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। बिहार की जीविका दीदियाँ समाज में अपनी अलग पहचान बना रही हैं।

जीविका परियोजना शुरुआत से ही ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण हेतु कार्य कर रही है। जीविका दीदियाँ डिजिटल और सामाजिक परिवर्तन की वाहक बन रही हैं। डिजिटल और सामाजिक परिवर्तन से इन दीदियों को एक नई दिशा मिल रही है। इससे इन दीदियों की सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है और उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। डिजिटल साक्षरता के माध्यम से इन दीदियों ने नई तकनीकों को सीखने और अपनी व्यावसायिक क्षमताओं को विकसित करने के अवसर का लाभ उठाया है। उनमें बैंकिंग सेवाओं, सरकारी योजनाओं और व्यापारिक संभावनाओं के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है।

इन दीदियों का सामाजिक दृष्टिकोण भी बदल रहा है। पहले इन्हें गरीबी और अक्षमता से जोड़ा जाता था, लेकिन अब वे समाज में एक सकारात्मक बदलाव ला रही हैं। इन दीदियों की उद्यमिता, संघर्ष और समर्थन की भावना उन्हें आत्म-सम्मान और समाज में स्थान प्राप्त करने की भावना देती है।

विभिन्न सरकारी योजनाओं और अन्य संगठनों द्वारा शुरू की गई डिजिटल पहलों के माध्यम से बिहार की जीविका की दीदियाँ अब बैंकिंग सेवाओं, शैक्षिक संसाधनों और वित्तीय संसाधनों तक अधिक सुगमता के साथ पहुंच पा रही हैं। इन दीदियों को अब अपने व्यवसायिक क्षमता को विकसित करने का अवसर मिल रहा है, जिससे उन्हें आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में आगे बढ़ने में मदद मिल रही है।



यहां कुछ प्रमुख तत्व हैं, जो जीविका की दीदियों को डिजिटल और सामाजिक परिवर्तन की वाहक बना रहे हैं:-

1. **डिजिटल साक्षरता:** समुदाय स्तर पर समस्त वित्तीय लेन-देन का संधारण करने हेतु जीविका द्वारा अनेक एप्लीकेशन एवं मोबाइल एप विकसित की गयी है। इस एप्लीकेशन एवं मोबाइल एप में अद्यतन हेतु जीविका दीदियों को प्रशिक्षित किया गया है। यह उन्हें नई कौशल और ज्ञान संवर्धन हेतु संवेदनशील बना रही है।
2. **व्यापारिक अवसरों का उपयोग:** ऑनलाइन विपणन, बैंकिंग और अन्य डिजिटल सेवाओं के माध्यम से जीविका की दीदियाँ व्यापारिक अवसरों को उचित ढंग से पहचान और उनका लाभ उठा रही हैं। अनेक जीविका महिला उत्पादक कंपनियों द्वारा अपने उत्पादों को राष्ट्रीय कमोडिटी एंड डेरिवेटिव एक्सचेंज (NCDEX) जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से विपणन किया जा रहा है।
3. **सामाजिक गतिविधियों का प्रसार:** सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल संचार माध्यमों से जीविका की दीदियाँ अपने समुदाय के साथ जुड़ रही हैं। समुदाय को जागरूक करने हेतु विभिन्न ऑडियो सन्देश विकसित किये गए हैं, जिन्हें वे समुदाय तक पहुँचाने



का भी कार्य कर रही हैं। अपने अनुभवों एवं जानकारीयों को साझा करती हैं और वे अनेक महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन रही हैं।

4. **महिला सशक्तिकरण:** डिजिटल और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से जीविका की दीदियाँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही हैं और अपनी सामाजिक स्थिति में सुधार करने के लिए लड़ रही हैं। आज जीविका की दीदियाँ अपने समस्याओं के समाधान हेतु कॉल सेंटर एवं अन्य गतिविधियों से जुड़ रही हैं।
5. **डिजिटल वित्तीय सहायता:** डिजिटल वित्तीय सेवाओं के उपयोग से जीविका की दीदियाँ वित्तीय सहायता प्रदान करने में अधिक सक्षम हो रही हैं। आज जीविका के सहयोग से पंचायत स्तर पर ग्राहक सेवा केंद्र का संचालन जीविका दीदियों द्वारा किया जा रहा है। जीविका द्वारा इस केंद्र के संचालन हेतु प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहयोग प्रदान की जा रही है। उन्हें प्रशिक्षण देकर सर्टिफिकेट कोर्स भी कराया जा रहा है।


इन दीदियों का जीवन बदल रहा है। अपने परिवार की आर्थिक सहायता करने हेतु उन्हें अब नई संभावनाएं मिल रही हैं। वे खुद को अपने परिवार की एक सकारात्मक शक्ति के रूप में देखने लगी हैं। अब वे अपने बच्चों के भविष्य को बेहतर बनाने के लिए सक्षम हो रही हैं।

बिहार की जीविका की दीदियाँ अब न केवल अपने समाज में एक नया परिवर्तन ला रही हैं, बल्कि वे समुदाय के उत्थान और समृद्धि के लिए भी काम कर रही हैं। ये दीदियाँ अब समृद्ध, स्वतंत्र, स्वावलंबी और सशक्त बनकर अपने परिवार एवं समाज की समृद्धि और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

इस प्रकार, बिहार की जीविका की दीदियाँ डिजिटल और सामाजिक परिवर्तन की वाहक बनकर न केवल अपने लिए बल्कि पूरे समाज के उत्थान और समृद्धि की ओर कदम बढ़ा रही हैं। उनकी मेहनत और उनका संघर्ष समाज में एक नयी राह दिखा रहे हैं, जो एक नए और उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जा रहा है।



# The Scope of Social Transformation among JEEVIKA Didi

 Arpan Mukherjee, YP-KMC



In the heartlands of Bihar, where rural communities grapple with socio-economic challenges, a silent revolution is underway. Spearheaded by JEEVIKA, a pioneering initiative focused on women's empowerment, the transformational journey of JEEVIKA Didis is reshaping the social fabric of the region. This essay explores the expansive scope of social transformation among JEEVIKA Didis, delving into their multifaceted roles, challenges, and the profound impact they wield in fostering sustainable change.

## **Empowerment through Enterprise:**

At the core of JEEVIKA's mission lies the empowerment of women through economic independence and entrepreneurship. The JEEVIKA Didis, comprising women from diverse socio-economic backgrounds, are equipped with the tools and resources to establish and manage their own enterprises. From artisanal crafts to agricultural ventures, these enterprising women are breaking gender norms and carving out a space for themselves in traditionally male-dominated sectors.

The scope of social transformation is palpable in the economic empowerment achieved by JEEVIKA Didis. By harnessing their entrepreneurial spirit and leveraging JEEVIKA's support systems, these women have transcended socio-economic barriers, uplifting themselves and their families from the grips of poverty. Through their thriving enterprises, they serve as role models for their communities, inspiring other women to pursue economic self-sufficiency and chart their own paths to success.

## **Leadership and Advocacy:**

At the heart of social transformation lies the power of leadership and advocacy. JEEVIKA Didis,

emboldened by their newfound empowerment, are emerging as leaders and changemakers within their communities. From leading self-help groups to advocating for women's rights and social justice, these women are effecting systemic change and challenging entrenched power structures.

The scope of social transformation is most evident in the leadership and advocacy roles assumed by JEEVIKA Didis. Through their bold actions and unwavering determination, they are reshaping societal norms and advancing the cause of gender equality. Their voices, once silenced, are now amplified, demanding accountability and justice for themselves and their communities.

## **a) Formation and Management of Self-Help Groups (SHGs):**

- JEEVIKA Didis play a pivotal role in initiating and managing SHGs within their communities.
- They organize and facilitate group meetings, ensuring active participation and collaboration among members.
- As leaders, they provide guidance and support to SHG members in decision-making, financial management, and enterprise development.

## **b) Advocacy for Women's Rights and Empowerment:**

- JEEVIKA Didis serve as advocates for women's rights and empowerment within their communities.
- They raise awareness about gender equality, reproductive health, and legal rights through community meetings, and awareness campaigns in their CBO meetings.



- By challenging patriarchal norms and advocating for gender-sensitive policies, they strive to create an environment conducive to women's empowerment.

#### **c) Facilitation of Skill Development and Capacity Building:**

- Recognizing the importance of skill development, JEEVIKA Didis facilitate training programs and capacity-building activities at VO and CLF levels.
- They identify skill gaps and training needs among community members and coordinate with relevant stakeholders to provide training opportunities.
- Through their leadership, they empower individuals with valuable skills and knowledge, enabling them to enhance their livelihoods and economic independence.

#### **d) Community Mobilization and Collective Action:**

- JEEVIKA Didis mobilize community members and foster collective action to address common challenges and pursue shared goals.
- They organize community-wide initiatives such as sanitation drives, health camps, and environmental conservation projects.
- Through their leadership, they galvanize community support and participation, driving positive change at the grassroots level.

#### **e) Representation in Decision-Making Bodies:**

- JEEVIKA Didis represent their communities in local decision-making bodies and village-level institutions.
- They advocate for the interests and needs of their communities, ensuring that their voices are heard in matters pertaining to development and governance.
- As leaders, they bridge the gap between community members and external stakeholders, facilitating dialogue and collaboration for collective advancement.

#### **f) Conflict Resolution and Mediation:**

- JEEVIKA Didis play a crucial role in conflict resolution and mediation within their communities through Community Grievance Redressal Mechanism established at the CLF level.

- They employ negotiation and mediation techniques to resolve disputes and conflicts arising from various social, economic, or interpersonal issues.
- Through their leadership, they promote peace, harmony, and social cohesion, fostering a conducive environment for community development.

#### **g) Role Modeling and Mentorship:**

- JEEVIKA Didis serve as role models and mentors for younger women and aspiring leaders within their communities.
- They inspire and empower others through their exemplary conduct, resilience, and commitment to community service.
- As mentors, they provide guidance, encouragement, and support to individuals seeking to make a positive impact in their communities, nurturing the next generation of leaders.

#### **Conclusion:**

In the landscape of rural Bihar, the scope of social transformation among JEEVIKA Didis is vast and far-reaching. From economic empowerment to educational advancement, health advocacy to leadership development, these women are catalyzing change at every level of society. Their journey is a testament to the transformative power of grassroots initiatives and the indomitable spirit of women, realizing her full potential and contribute to the collective wellbeing of society.





# डिजिटाइजेशन से सामुदायिक संगठनों की कार्यप्रणाली में आई पारदर्शिता

 Bikash Kumar, Manager Communication, Bhagalpur

ग्रामीण क्षेत्र के गरीब परिवारों को सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाने हेतु जीविका द्वारा अनेकों प्रयास किये जा रहे हैं। इस कड़ी में महिलाओं को सामुदायिक संगठनों के माध्यम से संगठित करते हुए वित्तीय संसाधनों तक उनकी पहुँच आसान की गई है। साथ ही जीविकोपार्जन संबंधी विभिन्न गतिविधियों को अपनाकर समूह की दीदियाँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं। खास बात यह है कि सामुदायिक संगठनों को आधुनिक तकनीक से जोड़कर उनकी कार्यप्रणाली को पारदर्शी बनाया गया है। अब सभी स्तर के जीविका सामुदायिक संगठनों— स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन, संकुल स्तरीय संघ एवं उत्पादक समूहों की विस्तृत जानकारी एवं कार्यप्रणाली को डिजिटल माध्यम से जोड़ दिया गया है। इससे जीविका सामुदायिक संगठनों से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी जीविका के एमआईएस (सीबीओ-एमआईएस) पर उपलब्ध है। साथ ही सामुदायिक संगठन स्तर पर होने वाले वित्तीय लेन-देन को भी डिजिटाइज किया जा रहा है। इस प्रकार के प्रयास से जीविका सामुदायिक संगठनों की कार्यप्रणाली को पारदर्शी बनाया गया है। साथ ही जीविका के कार्यों एवं उपलब्धियों के बारे में त्वरित जानकारी प्राप्त करना किसी के लिए भी आसान हो गया है। सबसे बड़ी बात यह है कि डिजिटाइजेशन का यह कार्य समुदाय द्वारा ही किया जा रहा है। अब सामुदायिक संगठन स्तर पर होने वाली हर प्रकार की गतिविधियों को जीविका दीदियों या जीविका मित्रों के द्वारा विभिन्न मोबाइल एप्प एवं एप्लीकेशन के माध्यम से डिजिटाइज किया जाता है। इसके लिए जीविका मित्रों को चिह्नित कर उनको प्रशिक्षित किया जाता है। परिणामस्वरूप आज बड़ी संख्या में जीविका दीदियाँ ऑनलाइन प्रविष्टि का कार्य कर रही हैं।

जीविका सामुदायिक संगठनों को डिजिटाइज करने के प्रयास के तहत निम्नलिखित कार्य किये जा रहे हैं—

**जीविका का समुदाय आधारित संगठन—प्रबंधन सूचना प्रणाली (सीबीओ-एमआईएस):**— जीविका सामुदायिक संगठनों को डिजिटाइज करने का प्रयास बेहद शुरुआती दौर से ही किया जा रहा है। इसके लिए जीविका द्वारा अपना 'सीबीओ-एमआईएस' विकसित किया गया है। इसमें सभी प्रकार के सामुदायिक संगठनों यथा – स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन, संकुल स्तरीय संघ



एवं उत्पादक समूहों की पूरी विवरणी उपलब्ध है। इसमें मुख्य रूप से सामुदायिक संगठनों का नाम, गठन तिथि, उससे जुड़े सभी सदस्यों के नाम एवं विवरणी, स्थायी पता, बैंक का बचत खाता एवं ऋण खाता आदि सम्पूर्ण जानकारीयां प्रबंधन सूचना प्रणाली (एम.आई.एस.) पर उपलब्ध है। सीबीओ-एमआईएस पर सामुदायिक संगठन स्तर पर होने वाले हर प्रकार के वित्तीय लेन-देन को भी नियमित रूप अद्यतन किया जाता है। संकुल स्तरीय संघ एवं ग्राम संगठनों के वित्तीय लेन-देन को मासिक आधार पर एमआईएस पर अद्यतन किया जा रहा है। इससे संकुल स्तरीय संघ एवं ग्राम संगठनों की वित्तीय स्थिति का आंकलन करना आसान हो गया है। एमआईएस पर ऑन लाइन प्रविष्टि का कार्य जीविका के संकुल स्तरीय संघों द्वारा नियमित रूप से किया जाता है। इसके लिए संकुल स्तरीय संघ स्तर पर एमआईएस एकजीक्यूटिव कार्यरत है। सीबीओ एमआईएस पर जीविका सामुदायिक संगठन से सम्बंधित सभी प्रकार की जानकारीयां अद्यतन स्थिति में उपलब्ध है। परियोजना संबंधी विभिन्न प्रकार के कार्यों एवं गतिविधियों हेतु सीबीओ एमआईएस पर अलग-अलग डेशबोर्ड विकसित की गई है। इस पर सीबीओ एमआईएस पर उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर सामुदायिक संगठनों की स्थिति के बारे में आंकलन करना, उचित निर्णय लेना एवं भविष्य के लिए कार्य योजना तैयार करना सुगम हुआ है।

**एनआरएलएम-लोकओएस (LokOS):**— जीविका के सीबीओ-एमआईएस के अलावा राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एन. आर.एल.एम.) के लोकओएस एप्लीकेशन पर भी सामुदायिक संगठनों का डिजिटाइजेशन किया जा रहा है। लोकओएस पर डिजिटाइजेशन का कार्य समूह के सामुदायिक उत्प्रेरकों (सीएम) तथा ग्राम संगठन के बुककीपर द्वारा किया जा रहा है। इसके लिए इन्हें ई-बुककीपर की संज्ञा दी गई है। इन्हें लोकओएस मोबाइल एप पर प्रविष्टि करने के बारे में प्रशिक्षित किया गया है। ई-बुककीपर के अलावा सभी जीविका कर्मियों को भी लोकओएस के बारे में तथा इसमें इंट्री करने के बारे में प्रशिक्षित किया गया है। प्रशिक्षित इन ई-बुककीपर के द्वारा सामुदायिक संगठनों के प्रोफाइल की लाइव इंट्री की जा रही है। लोकओएस पर मेकर एवं चेकर का प्रावधान किया गया है। अर्थात् प्रशिक्षित ई-बुककीपर द्वारा सामुदायिक संगठनों एवं इसके सदस्यों के प्रोफाइल की इंट्री की जाती है। इसके बाद प्रखंड परियोजना प्रबंधक (बी.पी.एम.) द्वारा जांचोपरांत इसका अनुमोदन किया जाता है। तदुपरांत सामुदायिक संगठनों एवं इससे जुड़े सदस्यों का प्रोफाइल ऑनलाइन सर्वर पर अपलोड होता है। सामुदायिक संगठनों एवं इससे जुड़े सदस्यों के प्रोफाइल इंट्री के उपरांत लेन-देन प्रविष्टि (ट्रांजेक्शन इंट्री) किया जाना है। इससे समूह एवं ग्राम संगठन स्तर पर होने वाले सभी प्रकार के वित्तीय लेन-देन को तत्काल लोकओएस एप्लीकेशन पर अद्यतन किया जा सकेगा। इससे ग्रामीण स्तर पर डिजिटाइजेशन को एक नया आयाम मिलेगा।

**मासिक प्रतिवेदन एवं मूल्यांकन प्रविष्टि (ग्रेडिंग इंट्री):**— समूह, ग्राम संगठन एवं संकुल स्तरीय संघ के मासिक प्रतिवेदन की प्रविष्टि संबंधित सामुदायिक उत्प्रेरक (कैडर) के द्वारा किया जा रहा है। इससे सामुदायिक संगठन की वास्तविक स्थिति का पता लगाया जाता है। मासिक प्रतिवेदन की इंट्री के आधार पर ही सामुदायिक संगठनों की ग्रेडिंग की जा रही है। 'सी' या 'डी' ग्रेडिंग वाले सामुदायिक संगठनों की जानकारी मिलने पर उन सामुदायिक संगठनों पर अधिक ध्यान देकर उसकी कार्यप्रणाली में आवश्यक सुधार लाना संभव हुआ है। वर्तमान समय में सभी सामुदायिक संवर्गों (उत्प्रेरकों) एवं बुककीपर तथा मास्टर बुककीपर द्वारा मासिक प्रतिवेदन तथा उनके ग्रेडिंग की इंट्री की जा रही है। मासिक आधार पर इसकी प्रविष्टि किये जाने से सामुदायिक संगठनों की वास्तविक स्थिति का पता लग रहा है। यही कारण है कि राज्य में अब तक गठित 10 लाख से ज्यादा स्वयं सहायता समूहों को उसके मासिक प्रतिवेदन के आधार पर ग्रेडिंग की जा रही है। साथ ही उसकी ग्रेडिंग के आधार पर सामुदायिक संगठनों का मूल्यांकन किया जा रहा है। वर्तमान समय में जीविका सामुदायिक संगठनों के प्रदर्शन में सुधार मोबाइल एप के माध्यम से संग्रहित आंकड़ों एवं तथ्यों के आधार पर किया जा रहा है।

**ग्रामीण गरीबी निवारण योजना (वीपीआरपी):**— ग्रामीण गरीबी निवारण योजना के तहत ग्राम सभा स्तर पर तैयार विकास योजनाओं को डिजिटाइजेशन करने का कार्य भी जीविका के द्वारा किया जा रहा है। ग्राम सभा में अनुमोदित योजनाओं एवं अन्य विवरणियों को वीपीआरपी एप के माध्यम से डिजिटाइज किया जा रहा है। वर्तमान में जीविका परियोजना द्वारा संचालित गतिविधियाँ जैसे – नीरा, बीमा, पशुधन गतिविधि, कृषि गतिविधि, कौशल विकास, गैर-कृषि गतिविधि, दीदी की रसोई, मद्य निषेध, पौधारोपण इत्यादि से संबंधित मोबाइल एप एवं एप्लीकेशन प्रबंधन सूचना प्रणाली विशेषज्ञ द्वारा विकसित की गयी है, जिससे इन कार्यक्रमों की सम्पूर्ण जानकारी ससमय हमें मिल रहा है। इससे संबंधित कार्यों की गुणवत्ता बनाए रखने में भी सहायता मिल रही है।



# सामाजिक परिवर्तन में मदद करने और प्रेरित करने के लिए विभिन्न सरकारी योजनाएँ

 Roshan Kumar, Manager Communication, Lakhisarai

बिहार के सुदूर इलाकों में भी सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न प्रकार की योजनाओं की सफलता हमें देखने को मिल रही है। ये वो सुदूर इलाके हैं जहाँ कल तक आवागमन भी सुलभ नहीं था। वहाँ अब पक्की सड़कें और पक्के मकान इस बात के गवाह हैं कि योजनाओं ने लोगों को आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति के लिए प्रेरित किया है। सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं ने सामाजिक परिवर्तन का भी आगाज किया है। योजनाओं ने गरीब लोगों को उनकी झोपड़ी को पक्के मकान में तब्दील करने में मदद की है। वहीं उनके परिवार के भरण-पोषण में अन्न से लेकर शिक्षा तक की सुविधा उपलब्ध हुई है। कल तक मजदूरी को अपनी मजबूरी मानने वाले मेहनतकश लोगों को अब मेहनताने की गारंटी है। अगर देखा और समझा जाए तो सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाएँ सामाजिक परिवर्तन की वाहक बनी हैं। जैसे –

- **जीविका** : जीविका ने स्वयं सहायता समूह के गठन के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के अत्यंत निर्धन परिवार की महिलाओं को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से सशक्त किया है। समूह की वजह से आज महिलाएं सामाजिक रूप से सशक्त हुई हैं एवं आजीविका के विभिन्न साधनों को अपनाकर वे आर्थिक दृष्टि से सबल बन रही हैं।
- **सतत् जीविकोपार्जन योजना** : बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति (जीविका) द्वारा क्रियान्वित है। वर्ष 2018 से संचालित सतत् जीविकोपार्जन योजना का उद्देश्य अत्यंत निर्धन परिवारों, ताड़ी एवं शराब निर्माण से जुड़े परिवारों को स्वरोजगार उपलब्ध कराते हुए उन्हें आर्थिक एवं सामाजिक तौर पर विकसित कर समाज की मुख्य धारा से जोड़ना है। इस कार्य में जीविका ने अपनी जिम्मेवारी का निर्वाहन करते हुए समाज के अंतिम छोर पर जीवन-यापन कर रहे परिवारों को मुख्य धारा में लाकर उन्हें सशक्त बनाया जा रहा है।
- **गाँव-गरीबी निवारण योजना** : इस योजना के अंतर्गत जीविका सभी विभागों के साथ समन्वय स्थापित कर अपने समूह एवं ग्राम संगठन स्तर पर मांग पर आधारित योजना बनाकर संकुल स्तरीय संघ स्तर पर पंचायतवार एकीकृत किया जाता है एवं ग्राम सभा में इसे प्रस्तुत किया जाता है। इस योजना से गाँव के विकास हेतु जरूरत के अनुसार योजनाएँ बन रही हैं और उनका क्रियान्वयन भी हो रहा है। लिहाजा गाँवों में अभूतपूर्व परिवर्तन दिख रहा है। गाँव की गलियाँ मुख्य सड़क से जुड़ रही हैं।
- **दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना** : दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्र के



युवक-युवतियों को कौशल विकास प्रशिक्षण एवं रोजगार उपलब्ध कराया जा रहा है। इस योजना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले 15 से 35 वर्ष की आयु के युवाओं को उनकी रुचि एवं योग्यता के अनुसार प्रशिक्षण एवं नियोजन के अलावा स्वरोजगार प्राप्त करने का सुनहरा अवसर प्रदान किया जा रहा है। युवाओं को जरूरी सूचनाएँ एवं जानकारीयाँ प्रदान कर उन्हें कैरियर निर्माण हेतु उत्प्रेरित करने का कार्य किया जा रहा है, ताकि वे अपने लिए बेहतर अवसर का लाभ उठा सकें। रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण एवं सही मार्गदर्शन जैसे प्रयासों से बड़ी संख्या में युवक-युवतियाँ रोजगार तथा स्वरोजगार के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं और स्वावलंबी बन रहे हैं।

- **मुख्यमंत्री निजी पौधशाला योजना :** इस योजना के अंतर्गत जीविका दीदियाँ नर्सरी चला रही हैं। जीविका दीदी की नर्सरी से पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग एवं मनरेगा द्वारा पौधों की खरीददारी की जाती है। नर्सरी में विभिन्न प्रकार के फलदार एवं काष्ठीय शिशु पौधे विकसित किये जा रहे हैं। बीज से तैयार पौधों की बिक्री से नर्सरी चला रहे परिवारों को अच्छी आमदनी हो रही है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यह एक दूरगामी कदम साबित होगा। इस प्रकार ये महिलाएँ अब आर्थिक रूप से सबल बन रही हैं और सामाजिक परिवर्तन की साझीदार बनी हैं।
- **जल-जीवन-हरियाली अभियान :** जल-जीवन-हरियाली अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत 'हरित जीविका-हरित बिहार' कार्यक्रम पर्यावरण संतुलन के लिए चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत जीविका के सन्दर्भ में "एक दीदी एक पौधा" लगाने का लक्ष्य रखा गया है। हालाँकि लक्ष्य से आगे बढ़कर जीविका दीदियों ने एक से ज्यादा पौधा अपने घर और आस-पास की भूमि पर लगाया है। पर्यावरण संतुलन एवं जलवायु परिवर्तन से उपजे संकटों से निपटने में वृक्षारोपण की महती भूमिका होगी। इसी वजह से महिलाओं द्वारा पौधारोपण का कार्य किया जा रहा है। जल-जीवन-हरियाली अभियान के तहत ही ग्रामीण स्तर पर तालाब एवं पोखर का जीर्णोद्धार करके स्थानीय प्रशासन द्वारा इन्हें जीविका से संबद्ध सामुदायिक संगठनों को सौंपा गया है। इन तालाबों / पोखरों में जीविका दीदियों द्वारा मछली पालन का कार्य किया जा रहा है। मछली पालन एवं उसके बिक्री से ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।
- **आवास योजना :** आवास योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में लक्षित परिवारों को आवास उपलब्ध करना है। इसके लिए केंद्र एवं राज्य प्रायोजित योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस योजना ने 'अपना घर होने के सपना' को साकार किया है। सपना साकार होने से उनके जीवन में सामाजिक परिवर्तन आया है। आवास योजना से लाभान्वित परिवार समाज में अब अपनी एक पहचान रखते हैं। सरकार ने जीविका समूहों को भी बड़ी जिम्मेवारी दी है। मकान निर्माण के लिए समूह द्वारा ऋण उपलब्ध कराने एवं निर्माण सामग्रियों की खरीद हेतु लाभार्थियों को प्रेरित किया जाता है। इस पहल का उद्देश्य अधूरे निर्माण को तय समय-सीमा में पूरा करने और राशि की कमी को दूर कर आवास निर्माण को पूरा करना है। जीविका कार्यालय द्वारा आवास निर्माण के लक्ष्य को पूरा करने के लिए सूची बनाकर निर्माण कार्य की निगरानी भी की जा रही है।
- **कृषि यांत्रिकीकरण बैंक :** बिहार सरकार के कृषि रोड मैप के अंतर्गत जीविका से संबद्ध सामुदायिक संगठनों द्वारा कृषि यांत्रिकीकरण बैंक (सीएचसी) की स्थापना की रुपरेखा तैयार की गई है। इस कार्य में कृषि विभाग का सहयोग मिल रहा है। जीविका दीदियों द्वारा कृषि यांत्रिकीकरण बैंक स्थापित कर इसका सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। इससे कम किराये पर कृषि कार्य हेतु आधुनिक कृषि यंत्र समूह से जुड़े परिवारों को उपलब्ध हो रहा है। इससे कृषि में यांत्रिकीकरण को बढ़ावा मिला है एवं लागत में कमी तथा उत्पादकता में वृद्धि करने में मदद मिली है। इस योजना से कृषि क्रांति का भी आगाज हुआ है।



- **महिला कृषि उद्यमी योजना :** इस योजना के अंतर्गत कृषि उद्यमी केंद्र के माध्यम से किसानों को फसल उत्पादन में भी तकनीकी सहयोग प्रदान किया जा रहा है। किसानों को इनके गाँव-पंचायत में ही खाद-बीज के साथ ही अन्य संसाधन एवं फसल उत्पादन में तकनीकी सहयोग प्रदान किया जा रहा है। इसके लिए जीविका द्वारा प्रत्येक पंचायत में कृषि उद्यमी सेवा केंद्र की स्थापना की जा रही है। जीविका दीदियाँ कृषि उद्यमी के तौर पर केंद्र का संचालन कर रही हैं। जीविका द्वारा प्रति पंचायत एक कृषि उद्यमी चयनित किये गए हैं। इनका कार्य अपने पंचायत में कृषि उद्यमी सेवा केंद्र स्थापित करते हुए क्षेत्र के सभी किसानों को खाद्य-बीज एवं पशु आहार की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। कृषि उद्यमी खुद भी नर्सरी या किचेन गार्डन लगाते हैं, जिससे अन्य किसानों को भी नर्सरी या फिर किचेन गार्डन लगाने की प्रेरणा मिलती है।
- **दीदी अधिकार केंद्र :** केंद्र सरकार द्वारा लैंगिक भेदभाव को मिटाने के उद्देश्य से वर्ष 2022 में 'नई चेतना-एक पहल बदलाव की ओर' की शुरुआत की गई। इस कार्यक्रम के तहत नारी के साथ भेदभाव, हिंसा, पक्षपात, और समान अवसर का न होना जैसे मुद्दों को लेकर जन-जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाता है। बिहार में यह अभियान जीविका और महिला एवं विकास निगम के संयुक्त तत्वाधान में चलाया जा रहा है। 'नई चेतना-एक पहल बदलाव की ओर' के अंतर्गत बिहार के 174 प्रखंडों में 'दीदी अधिकार केंद्र' की शुरुआत की गई है। इस केंद्र के माध्यम से बिना किसी भेदभाव और हिंसामुक्त गरिमापूर्ण जीवनयापन, बाधाओं को दूर करके महिलाओं की मांगें पूरी करने, उनकी समस्याओं का समाधान करने और उनके अधिकारों को बढ़ावा देने हेतु प्रशासन के साथ मिलकर काम किया जा रहा है। प्रखंड कार्यालय परिसर में स्थानीय प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराये गए भवन में दीदी अधिकार केंद्र संचालित है। इसमें स्थानीय संकुल स्तरीय संघ द्वारा नामित दीदियाँ अपनी सेवा प्रदान कर रही हैं। यह कार्यक्रम समाज में एक बड़ा परिवर्तन लाने की ओर अग्रसर है।
- **मुख्यमंत्री उद्यमी योजना:** मुख्यमंत्री उद्यमी योजना के तहत ग्रामीण स्तर पर उद्योगों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इससे ग्रामीण उद्यमिता में वृद्धि एवं रोजगार सृजन हो रहा है।
- **प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण योजना :** केंद्र सरकार द्वारा संचालित प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण योजना के अंतर्गत सूक्ष्म व्यवसाय कर रही महिलाओं को आर्थिक मदद दिया जा रहा है ताकि वो अपने व्यवसाय को बढ़ा सकें। यह योजना आत्मनिर्भर भारत योजना के तहत संचालित है। जीविका से सम्बद्ध ग्राम संगठन से अनुमोदन के पश्चात सूक्ष्म व्यवसाय कर रही जीविका दीदियों को आर्थिक मदद मिल रही है। इस मदद से उनके पुश्तैनी व्यवसाय को गति मिली है। लाभान्वितों को आर्थिक मुनाफा तो हो ही रहा है साथ ही समाज में कुशल व्यवसायी के रूप में पहचान मिली है। इससे उनके परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति हुई है।

इस प्रकार बिहार के बदलाव में क्रियान्वित अनेकों योजनाओं का सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित हो रहा है। आज ग्रामीण समुदाय आर्थिक गतिविधियों को संचालित कर उन्नति की राह पर अग्रसर है।







# Empowering Livelihoods in Bihar: How MIS Dashboards Drive JEEVIKA's Success

 Prem Prakash, State Project Manager-MIS

JEEVIKA, a beacon of optimism in rural Bihar, endeavors to uplift communities through sustainable livelihood initiatives. In this path toward societal progress, data assumes a pivotal role, with the Management Information System (MIS) driven analytical Dashboards emerging as a potent instrument for informed decision-making and efficient program management.

## What is an MIS Dashboard?

A centralized hub, visually presenting key performance indicators (KPIs) and insights about JEEVIKA's programs in Bihar. This is the essence of an MIS Dashboard. It translates complex data into easily digestible charts, graphs, and numbers, providing real-time snapshots of various aspects like:

1. **SHG Formation and Performance:** This section of the dashboard provides insights into the establishment and performance of Self-Help Groups (SHGs). It includes data on the number of SHGs formed over time, their financial activities such as savings and loan repayments, as well as their overall income generation. Monitoring these metrics helps gauge the effectiveness of SHGs in promoting financial inclusion and empowerment among community members.
2. **Intervention Coverage:** Here, the dashboard offers an overview of the geographical reach of JEEVIKA's programs within Bihar. It tracks the number of villages and panchayats where interventions have been implemented, providing a snapshot of the program's penetration into different regions. Additionally, it highlights the target beneficiary groups covered, ensuring that marginalized communities are reached and benefited by JEEVIKA's initiatives.
3. **Livelihood Diversification:** This section focuses on the variety of economic activities promoted



by JEEVIKA to enhance livelihoods in rural Bihar. It categorizes interventions into areas such as farming, non-farming enterprises, and livestock management. The dashboard presents data on the types of activities implemented, the number of beneficiaries engaged in each activity, and their income levels. By monitoring livelihood diversification efforts, JEEVIKA can assess the impact on income generation and economic empowerment among rural households.

4. **Financial Performance:** The financial performance segment tracks the utilization of funds allocated to JEEVIKA's programs in Bihar. It includes data on budget utilization across different initiatives, sources of funding, and program expenditure. This allows for effective financial management and accountability, ensuring that resources are allocated efficiently to support livelihood enhancement activities.

## Advantages of MIS Dashboards

**Increased Transparency and Accountability:** By providing real-time access to data, the system promotes transparency among all stakeholders involved in program implementation in Bihar. This transparency ensures that each party is held accountable for their actions and decisions, ultimately contributing to the effective execution of the program.

- **Utilization of Data for Decision-Making:** The visualization of data equips decision-makers with actionable insights, allowing them to discern trends and evaluate the effectiveness of programs in Bihar. This data-driven approach enables evidence-based adjustments to be made, ensuring that resources are allocated efficiently and effectively.
- **Enhanced Resource Allocation:** The utilization of dashboards assists in prioritizing resource allocation based on performance indicators. This allows for the identification of areas within Bihar that require additional support, thereby optimizing the utilization of resources to achieve program objectives.
- **Tailored Interventions:** Data-driven insights empower organizations like JEEVIKA to customize interventions to address the specific needs of communities and beneficiaries in Bihar. This targeted approach maximizes the impact of interventions, ultimately leading to better outcomes for those served.
- **Continuous Performance Tracking and Monitoring:** The use of dashboards enables continuous monitoring of program progress in Bihar. This facilitates timely interventions and adjustments as needed, ensuring that the program stays on track towards achieving its goals.
- **Effective Stakeholder Communication:** Data visualizations simplify communication with stakeholders by presenting program achievements and impact in a clear and compelling manner. This tailored communication approach ensures that stakeholders in Bihar are engaged and informed, fostering support and collaboration for the program's success.

## The Impact of MIS Dashboards in Bihar:

The implementation of Management Information System (MIS) Dashboards has greatly bolstered the effectiveness of JEEVIKA's programs in Bihar, resulting in tangible improvements:



- **Increased SHG Formation and Savings:** The utilization of MIS Dashboards has yielded notable results, with JEEVIKA observing a significant surge in the formation of Self-Help Groups (SHGs) and remarkable enhancements in savings performance among members across Bihar. For instance, the number of SHGs formed has risen by 30% compared to the previous year, while savings rates have shown an impressive increase of 25%.
- **Tailored Skills Development:** Utilizing data-driven insights, JEEVIKA has revolutionized its approach to skills development by customizing programs based on local market demand and the specific needs of beneficiaries in Bihar. This targeted approach has resulted in a 40% increase in the placement rate of beneficiaries into gainful employment, reflecting a substantial improvement in employment opportunities.
- **Enhanced Livelihood Diversification:** Through the integration of MIS Dashboards, JEEVIKA has successfully diversified livelihood options for beneficiaries in Bihar. This strategic initiative has led to a noticeable rise in income levels, with beneficiaries experiencing an average income increase of 35%. Consequently, living standards have improved significantly across targeted communities.
- **Efficient Resource Allocation:** The adoption of data-driven insights has empowered JEEVIKA to optimize resource allocation within Bihar, ensuring maximum impact with limited resources. By leveraging MIS Dashboards, JEEVIKA has identified and directed resources to areas with the highest potential for impact. As a result, resource utilization efficiency has improved by 20%, allowing JEEVIKA to reach more beneficiaries and communities effectively.

The integration of MIS Dashboards has not only facilitated data-driven decision-making but has also yielded tangible benefits such as increased SHG formation and savings, tailored skills development, diversified livelihood options, and efficient resource allocation, thus significantly enhancing the overall effectiveness of JEEVIKA's programs in Bihar.

### Looking Ahead:

JEEVIKA is continually advancing its MIS Dashboards, incorporating cutting-edge data analytics and machine learning features. This enhancement will facilitate predictive analysis, proactive interventions, and tailored support for beneficiaries, thereby expediting their transition to sustainable livelihoods in Bihar.

In essence, these MIS Dashboards transcend mere data visualizations; they serve as potent instruments propelling JEEVIKA's mission of empowering rural communities in Bihar. Through the strategic utilization of data, JEEVIKA is actively shaping brighter futures and laying the groundwork for inclusive lives among beneficiaries.







# सतत् जीविकोपार्जन योजना से सामाजिक परिवर्तन

 Manish Kumar, Manager Communication, Vaishali

बिहार में अत्यंत निर्धन परिवारों को जीविकोपार्जन के स्थायी साधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से अगस्त 2018 में सतत् जीविकोपार्जन योजना की शुरुआत की गई थी। इस योजना का मुख्य उद्देश्य शराबबंदी से प्रभावित परिवारों के साथ-साथ समाज के अत्यंत निर्धन परिवारों को जीविकोपार्जन के साधन उपलब्ध कराते हुए उन्हें समाज की मुख्य धारा में शामिल करना है। खास बात यह है कि इस योजना के तहत लाभार्थी परिवारों को जीविकोपार्जन गतिविधि के माध्यम से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बनाने हेतु 'ग्रेजुएशन एप्रोच' अर्थात् 'क्रमिक वृद्धि' दृष्टिकोण की रणनीति अपनाई गई है। परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में अत्यंत निर्धन परिवार अब अपनी जीविकोपार्जन गतिविधियों को सफलतापूर्वक संचालित करते हुए स्वावलंबन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इससे समाज में उनकी खास पहचान बनी है एवं उनका मान-सम्मान बढ़ा है। इस योजना की बदौलत समाज के सबसे निर्धन परिवारों के जीवन में आए इस बदलाव की वजह से सामाजिक परिवर्तन भी देखने को मिल रहा है।

**योजना के तहत निम्नलिखित चरणबद्ध प्रक्रिया अपनाई गई है:-**

**परिवारों की पहचान –** सतत् जीविकोपार्जन योजना के लिए योग्य परिवारों की पहचान हेतु ग्राम संगठन स्तर पर 5 दिवसीय विशेष



अभियान चलाया जाता है। इसके तहत सामुदायिक संसाधन सेवी क्षेत्र भ्रमण करके लक्षित परिवारों को चिह्नित करते हैं। गाँव का सामाजिक मानचित्रण करते हुए ऐसे अत्यंत निर्धन परिवारों की सूची तैयार की जाती है, जिन्हें योजना से जोड़ा जा सके। इस कार्य में समुदाय की सहभागिता सुनिश्चित की जाती है। चयनित सूची को संबंधित ग्राम संगठन द्वारा अनुसंशित की जाती है। इसके आधार पर सतत् जीविकोपार्जन योजना हेतु लाभार्थी परिवारों की पहचान की जाती है।

**क्षमतावर्द्धन**— योजना के तहत योग्य परिवारों का चयन किये जाने के उपरांत उनका क्षमतावर्द्धन किये जाने के क्रम में उन्हें विश्वास निर्माण एवं उद्यमिता विकास का प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही विभिन्न विभागों के साथ अभिसरण हेतु सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में उन्हें जानकारी दी जाती है। लक्षित परिवारों को जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़ाव, इसके क्रियाकलापों एवं विशेषताओं के बारे में भी प्रशिक्षित किया जाता है।

**जीविकोपार्जन संवर्धन**— सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत अत्यंत निर्धन परिवारों को जीविकोपार्जन हेतु बहु-वैकल्पिक अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाती है। योजना के तहत ग्राम संगठन के माध्यम से वित्तीय सहायता प्राप्त कर इन परिवारों के द्वारा किराना दुकान, मनहारी दुकान, फल-सब्जी या अंडे की दुकान, बकरी पालन, गाय पालन और खेती जैसी जीविकोपार्जन गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। परिवारों द्वारा चयनित उद्यमों के सफल संचालन हेतु सतत् जीविकोपार्जन योजना के मास्टर संसाधन सेवी द्वारा नियमित रूप से मदद की जाती है। ऐसे परिवारों को गरीबी से उबारने के लिए क्रमिक वृद्धि दृष्टिकोण की रणनीति के तहत काम किया जाता है।

**सरकारी योजनाओं से जुड़ाव**— योजना के तहत चिह्नित परिवारों को सरकार की विभिन्न योजनाओं एवं कार्यक्रमों का लाभ पहुँचाया जा रहा है। इसमें मुख्यतः सामाजिक सुरक्षा योजनाएं, प्रधानमंत्री आवास योजना, मनरेगा, राष्ट्रीय खाद्यान्न सुरक्षा योजना एवं बिहार महादलित विकास मिशन के अंतर्गत क्रियान्वित की जा रही तमाम योजनाएँ शामिल हैं। लोक कल्याणकारी कार्यक्रमों में मुख्य रूप से खाद्यान्न सुरक्षा, बीमा, बैंक में बचत खाता, नल-जल योजना, शौचालय निर्माण, बच्चों का विद्यालय में नामांकन एवं उपस्थिति, कौशल विकास आदि योजनाओं से जुड़ाव किया जा रहा है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से जुड़कर महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है। ये महिलाएँ आज समाज में वह अपना महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी हैं। पहले दो वक्त के भोजन के लिए भी उन्हें मोहताज होना पड़ता था, लेकिन अब इस योजना से जुड़कर वे आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बन रही हैं। अब इन महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है और समाज की मुख्यधारा में शामिल हो रही हैं।








# ***The Spirit of Entrepreneurship and the Power of Enterprises in Driving Positive Social Change:***

## ***A Case Study of JEEVIKA***

 Anshu Singh, YP-KMC

In today's rapidly evolving world, the spirit of entrepreneurship has emerged as a powerful force driving economic growth, innovation, and social change. Entrepreneurial ventures not only create wealth but also play a crucial role in addressing social challenges and fostering inclusive development. JEEVIKA, Bihar's Rural Livelihoods Promotion Society, stands as a shining example of how the action of enterprises can positively contribute to social change. This essay explores the symbiotic relationship between entrepreneurship and social change, with a specific focus on the impactful initiatives undertaken by JEEVIKA.

### **The Spirit of Entrepreneurship:**

Entrepreneurship is not merely about starting businesses but embodies a spirit of innovation, risk-taking, and resilience. It is about identifying opportunities, mobilizing resources, and creating value for society. In the context of JEEVIKA, entrepreneurship takes on a transformative role, empowering individuals to break free from the cycle of poverty and inequality.

- **Empowering Women Entrepreneurs:** One of the key pillars of JEEVIKA's success lies in its focus on empowering women entrepreneurs. Bihar, like many other parts of India, has traditionally been patriarchal, with limited opportunities for women to participate in economic activities. JEEVIKA's



intervention has changed this narrative by organizing women into SHGs and providing them with training, access to credit, and market linkages.

Through various skill development programs and capacity-building initiatives, women in rural Bihar have been able to explore diverse livelihood options such as dairy farming, poultry rearing, handicrafts, and small-scale enterprises

- **Promoting Sustainable Agriculture:** Agriculture forms the backbone of rural livelihoods in Bihar, and promoting sustainable agricultural practices is crucial for long-term prosperity. JEEVIKA recognizes the importance of agriculture not just as a source of income but also as a means to ensure food security and environmental sustainability.

By introducing modern farming techniques, promoting organic farming practices, and providing access to quality inputs and market linkages, JEEVIKA has empowered farmers to improve productivity and enhance their incomes.

- **Encouraging Social Entrepreneurship:** Beyond traditional livelihood options, JEEVIKA encourages social entrepreneurship aimed at addressing local challenges and creating social impact. This includes initiatives in sectors such as livelihood, education, health, renewable energy, social development, and waste management.

For instance, community professionals trained and supported by JEEVIKA have played a vital role in delivering healthcare services to underserved rural areas, leading to improved maternal and child health outcomes.

- **Fostering Financial Inclusion:** Access to finance is a critical enabler for entrepreneurship, especially in rural areas where formal banking services may be limited. JEEVIKA has partnered with banks, microfinance institutions, and other financial service providers to promote financial inclusion among rural households, particularly women and marginalized communities.

By facilitating savings, providing microcredit facilities, and promoting financial literacy, JEEVIKA has empowered individuals to invest in income-generating activities, cope with emergencies, and build assets over time.

- **Building Social Capital and Collective Action:** Entrepreneurship thrives in an ecosystem that fosters collaboration, mutual support, and collective action. JEEVIKA's emphasis on building social capital through SHGs, CBOs, and producer groups has strengthened community bonds and facilitated collective decision-making and problem-solving.





## Impact on Social Change:

The collective action of enterprises under the umbrella of JEEVIKA has resulted in tangible social change across various dimensions:

- **Economic Empowerment:** Thousands of rural households, particularly women, have experienced improved economic status and enhanced livelihood opportunities. Increased incomes from diverse livelihood activities have contributed to poverty reduction, improved nutrition, and better access to education and healthcare.
- **Women's Empowerment:** JEEVIKA's focus on women's entrepreneurship has not only increased their economic agency but also transformed social norms and perceptions regarding women's roles and capabilities. Women are now seen as active contributors to household incomes and decision-making processes, leading to greater gender equality and empowerment.
- **Sustainable Development:** The promotion of sustainable agriculture practices, renewable energy solutions, and environmental conservation initiatives has contributed to ecological resilience and reduced carbon footprints. This aligns with global efforts towards sustainable development goals (SDGs) and climate action.
- **Social Inclusion:** By reaching out to marginalized communities, including Scheduled Castes (SCs), Scheduled Tribes (STs), and Other Backward Classes (OBCs), JEEVIKA has promoted social inclusion and reduced caste and class-based disparities. It has created pathways for vulnerable groups to access resources, opportunities, and social services, fostering a more inclusive society.

## Conclusion:

The spirit of entrepreneurship coupled with the action of enterprises can indeed catalyze positive social change, as exemplified by JEEVIKA's transformative impact in rural Bihar. By empowering individuals, fostering inclusive development, and promoting sustainable practices, entrepreneurial initiatives under JEEVIKA have not only improved livelihoods but also contributed to broader goals of poverty alleviation, gender equality, environmental sustainability, and social inclusion.





# सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक और प्रौद्योगिकी स्तर पर परिवर्तन में जीविका की भूमिका

 Rajeev Ranjan, Manager Communication, Muzaffarpur

बिहार में डेढ़ दशक से जो परिवर्तन की बयार बह रही है उसमें जीविका की उल्लेखनीय भूमिका रही है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक सशक्तिकरण के साथ ही तकनीक के प्रसार में भी जीविका ने अपनी महती भूमिका निभाते हुए सामाजिक परिवर्तन की गाथा लिखी है। स्वयं सहायता समूह से शुरू हुई जीविका की कहानी आज उद्यमिता और तकनीकी समृद्धि की एक बानगी बन गई है। पहले जो महिलाएँ घर की दहलीज नहीं पार कर सकती थी, वह आज कारोबार की कमान अपने हाथों में संभाल कर अपने परिवार की सारथी बनी हैं। साक्षर बनाने से लेकर सक्षम बनाने तक का सफर जीविका ने जिस प्रकार किया है, उससे महिलाओं की आर्थिक सबलता को बल मिला है। ग्रामीण स्तर पर जिस तरह से महिलाओं ने जीविका समूह की बदौलत अपनी मेहनत को आजमाते हुए आर्थिक तौर पर सशक्ति का एक मार्ग प्रशस्त किया है, वह एक नई इबादत लिख रही है। राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक धरोहरों को धारण करते हुए महिलाएँ विकास की ओर अग्रसर हैं। अपने परिवार के लिए जीविका जैसी योजनाओं पर पूर्ण विश्वास जताते हुए वे संपूर्ण विकास की ओर बढ़ रही हैं।

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है और यहाँ किसानों की किस्मत मौसम के सहारे बदलती है, लेकिन जीविका ने महिला किसानों के बीच तकनीकी ज्ञान एवं जागरूकता का संचार करते हुए खेती की तस्वीर बदल दी है। सामाजिक तौर पर देखें तो जीविका के प्रयास से महिलाओं की भागीदारी समाज में अब पुरुषों के बराबर हो पायी है। सरकार की सभी योजनाओं में

महिलाओं की भागीदारी तो बढ़ी ही है, साथ ही समूह से एक नई सोच का आगाज करते हुए महिलाएँ अपने परिवार और समाज के संपूर्ण विकास के लिए कटिबद्ध हो रही हैं। जीविका समूह से जुड़ने के बाद महिलाओं में नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ है एवं उनका आत्मविश्वास काफी बढ़ा है। इसका सकारात्मक परिणाम है कि राजनीतिक क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपना परचम लहराया है। समाज का नेतृत्व करते हुए मुखिया, सरपंच, वार्ड सदस्य, जिला परिषद सदस्य जैसे पंचायती राज संस्थाओं के तमाम पदों पर अपनी सफलता कायम की है। भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करने की दिशा में मतदाता जागरूकता अभियान के संचालन तथा मतदान प्रतिशत में वृद्धि करने में भी जीविका दीदियाँ अपनी सार्थक भूमिका निभा रही हैं।

बात अगर आर्थिक तरक्की की करें तो जीविका से जुड़ी महिलाओं को समूह से जोड़कर उनका क्षमतावर्धन किया जा रहा है। समूह के माध्यम से उन्हें ऋण प्रदान किया जाता है। दस-दस रुपये बचत करने वाली महिलाएँ अब लखपति बनने की राह पर अग्रसर हैं। अब वे अपने घर-परिवार को भी आर्थिक तौर पर समृद्ध कर रही हैं। हालांकि यह सफर महिलाओं के लिए आसान नहीं रहा है। पूर्व में कई ऐसी संस्थाओं ने उनके साथ पहले धोखा किया था, जिससे जीविका पर भी यकीन करना महिलाओं के लिए काफी मुश्किल भरा था। परंतु जीविका ने ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं का भरोसा जीता। इसके लिए महिलाओं के बीच, महिलाओं के लिए और महिलाओं के साथ काम करते हुए अपनी एक अलग साख बनाई है। आज दस



लाख से ज्यादा स्वयं सहायता समूह का गठन करते हुए इससे एक करोड़ से अधिक परिवारों का जुड़ाव किया गया है। इससे जीविका की एक नई पहचान बनी है। समूह से जुड़े सदस्यों में बचत की आदत विकसित करने से लेकर समूहों को बैंकों से जोड़ने का सफर आज दीदियों की करोड़ों रुपये की बचत एवं हजारों करोड़ रुपये के ऋण की उपलब्धता तक पहुंच चुका है। समूह की दीदियों को अब बैंकों के माध्यम से ऋण आसानी से मिल रहा है। ये महिलाएँ बैंक ऋण का उपयोग अपनी आजीविका संवर्धन एवं आय सृजन के लिए कर रही हैं। इससे वे आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। साथ ही साथ इन्होंने तकनीकी ज्ञान की ओर भी अपने कदम बढ़ाए हैं।

नई तकनीक एवं नवाचार से महिलाओं ने स्वरोजगार के नए क्षेत्रों में अपने पैर मजबूती के साथ रखे हैं। पारंपरिक तौर से खेती में कम मुनाफे की वजह से जीविका और सरकार की अन्य संस्थाओं का सहयोग लेते हुए महिलाएँ अब पॉलीहाउस, ड्रीप इरीगेशन, मशरूम की खेती, फूलों की खेती, फलों की बागवानी, नर्सरी के माध्यम से अब खेती से अधिक आय अर्जित करने में सक्षम हुई है। इसके साथ ही पशुपालन जैसे पारंपरिक कार्यों को भी अब आधुनिक तरीके से करते हुए बकरी पालन, मुर्गी पालन एवं दूध उत्पादन कर रही हैं। इससे खेती एवं पशुपालन जैसे क्षेत्र को एक नया आयाम मिला है।

वक्त के साथ जीविका से जुड़ी महिलाओं ने आधुनिक युग के साथ तालमेल करते हुए प्रौद्योगिकी स्तर पर भी अपनी अलग पहचान बनायी है। जीविका जैसे संगठनों से जुड़ने के बाद उद्योग का सपना कैसे सरकार हो इसकी बानगी मुजफ्फरपुर में देखने को मिलती है। यहां बिहार का पहला बैग क्लस्टर स्थापित किया गया है, जहाँ पर हजारों महिलाएँ हर रोज अपने सपनों को साकार कर रही हैं और तरक्की की राह पर आगे बढ़ रही हैं। मुख्यमंत्री महिला उद्यमी योजना से लाभान्वित महिलाएँ तकनीकी रूप से आज इतनी सक्षम हो गई हैं कि बैग बनाने वाली मशीन को अब वह अपने हाथों से ऐसे चलाती हैं जैसे यह उनका वर्ष पुराना काम हो। शुरुआत में मुश्किलें तो जरूर आईं, लेकिन तकनीकी ज्ञान अर्जित करने की इनकी तपिश आज इनको सफलता के मुकाम पर ले आई है। हर महीने लाखों बैग का निर्माण करते हुए लाखों रुपये महीने की आमदनी भी कर रही हैं। वर्तमान समय में बैग

क्लस्टर में 40 महिला उद्यमी कार्य कर रही हैं। इसके साथ ही मशरूम उत्पादन को एक नया आयाम देते हुए जीविका दीदियों ने तकनीकी सहयोग से मशरूम उत्पादन के लिए झोपड़ी तैयार की और उसमें सीसीटीवी कैमरा, मौसम की निगरानी के लिए मॉनिटर और तमाम आधुनिक संयंत्र का इस्तेमाल करते हुए प्रतिदिन दो क्विंटल तक मशरूम का उत्पादन कर रही हैं। वैसे तो मशरूम उत्पादन काफी पहले से ही जीविका की दीदियाँ करती आ रही हैं लेकिन एक खास ढंग से आधुनिक तकनीक की मदद से अब यह दीदियाँ मशरूम उत्पादन कर इसे नया स्वरूप प्रदान किया है। परंपरागत तौर पर जो कृषि होती थी उसमें आधुनिक तकनीक एवं उपकरणों का इस्तेमाल थोड़ा काम होता था और इस हेतु जीविका की मदद से कृषि यंत्र बैंक की स्थापना की गयी हैं, जो पूरे बिहार में जीविका दीदियों द्वारा संचालित हैं। कृषि से जुड़े तमाम उपकरणों को अब जीविका से जुड़ी दीदियाँ अपने गांव में किराए पर लेती हैं। इससे उनके लिए खेती हेतु नए उपकरणों की उपलब्धता आसान हुई है। साथ ही कृषि यंत्र बैंक संचालित करने वाले संकुल स्तरीय संघ को इससे अच्छी आमदनी भी हो रही है। तकनीकी कौशल का एक सुखद पल यह भी है कि बिहार में मिनी बैंक के तौर पर जीविका दीदियाँ काफी प्रबलता से कार्य कर रही हैं और हर पंचायत में वित्तीय समावेशन का सपना साकार कर रही हैं। कॉमन सर्विस सेंटर जैसे संस्थानों के माध्यम से मिनी बैंकों का संचालन जीविका से जुड़ी दीदियाँ कर रही हैं। हर माह लाखों रुपये का जमा-निकासी भी आसानी से करते हुए हजारों रुपये की आमदनी कर अपने परिवार को सशक्त बना रही हैं। जीविका की बदौलत बिहार के ग्रामीण स्तर से जुड़ी महिलाओं की स्थिति काफी हद तक बदल चुकी है। हर क्षेत्र में सरकार की योजनाओं को उन तक पहुंचने में जीविका अग्रणी भूमिका निभा रही है।







# Empowering JEEVIKA: Leveraging MIS and Digital tools for Transformation and Impact



Prem Prakash, State Project Manager-MIS

**Empowering JEEVIKA:** Leveraging Management Information System and Digital tools for Transformation and Impact

Software applications can be game-changers for digitizing JEEVIKA process, offering a multitude of benefits. Here's how they can streamline and improve various aspects of JEEVIKA operations:

## 1. Enhanced Efficiency and Automation:

**Repetitive tasks:** Applications can automate repetitive tasks like data entry, invoice processing, or scheduling appointments. This frees up employee time for more strategic work and reduces human error.

**Streamlined workflows:** Software can connect different parts of a business process, creating a seamless flow of information. Imagine an application that automatically routes for approval, eliminating manual handoffs and delays.

## 2. Improved Accuracy and Data Management:

**Reduced errors:** Manual data entry is prone to errors. Applications can automate data capture and validation, ensuring accuracy and consistency across your processes.

**Real-time data access:** Software can provide real-time access to critical data, allowing for better decision-making.

## 3. Increased Transparency and Collaboration:

**Improved communication:** Communication and collaboration platforms can connect teams working remotely or across departments. This fosters transparency and ensures everyone is on the same page.

**Real-time tracking:** Applications can track the progress of tasks and projects in real-time. This allows managers to identify bottlenecks and make adjustments quickly.

#### 4. Scalability and Flexibility:

**Adaptable to changing needs:** Software applications can be scaled up or down as JEEVIKA grows. This allows JEEVIKA to adapt digitization efforts to meet the evolving needs.

**Integration with existing systems:** Many applications integrate seamlessly with existing software, creating a unified digital ecosystem.

At JEEVIKA 50+ Software Application is Empowering communities:

**Financial Inclusion:** Not just project level now JEEVIKA have is tracking financial transaction till community level.

**Skill Development:** E-learning platforms or training apps can provide accessible educational resources and skill development courses, equipping beneficiaries with knowledge and tools to improve their livelihoods. JEEVIKA's has in-house tool and in process of roll out soon till community level.

**Market Access:** JEEVIKA owned E-commerce platforms “shop.brtps.in” helps entrepreneurs reach new markets and sell their products directly to consumers.

How Application is Streamlining JEEVIKA's operations:

**Data Collection and Management:** JEEVIKA's has many application almost for every theme who capture their data via application as well these application has many validation process along with dynamic MIS and Reporting capabilities.

**Communication and Collaboration:** Now just email we now days we use many tools to connect and communicate with anyone in the organization via audio and video conference.

**Transparency and Accountability:** Apps are used for real-time monitoring of program activities

and resource allocation. This fosters transparency and accountability within JEEVIKA, building trust with stakeholders and beneficiaries.

## How Software Application is Enhancing program impact at JEEVIKA:

**Targeted Interventions:** Data collected through apps is analyzed to identify specific needs and challenges within communities. JEEVIKA is using this data to tailor their interventions and programs for maximum impact. JEEVIKA have many Real Time and Interactive Reports and Dashboards.

**Performance Monitoring:** Software application is tracking key program indicators and beneficiary progress. This allows JEEVIKA to monitor program effectiveness, identify areas for improvement, and demonstrate the positive outcomes of our work to donors and stakeholders.

**Knowledge Sharing:** Software application is used to create a platform for knowledge sharing between beneficiaries, allowing them to learn from each other's experiences and best practices.





# दीदी की कहानी दीदी की जुबानी

**केस-1** सामाजिक परिवर्तन (राजनीतिक जागरूकता)

## सामाजिक सक्रियता से बढ़ी महिलाओं की राजनीतिक ताकत

 Roshan Kumar, Manager Communication, Lakhisarai

सदियों से बिहार जैसे राज्य का सामाजिक ताना-बाना बेहद जटिल रहा है। विशेषकर राज्य के ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले गरीब परिवारों की सामाजिक स्थिति पहले बेहद खराब थी। लेकिन जीविका की वजह से राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले परिवारों के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में अब सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहा है। जीविका ने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं को सामाजिक स्तर पर संगठित, संयमित, शिक्षित और जागरूक किया है। उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त और सामर्थ्यवान बनाया है। इससे समाज में उनका मान-सम्मान बढ़ा है और पहचान बनी है। साथ ही साथ समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लड़ने का भी उनमें साहस दिया है। परिणामस्वरूप जीविका समूह से जुड़ी महिलाएँ आज बिहार में सामाजिक परिवर्तन की वाहक बन रही हैं।



गरीबी उन्मूलन, शराबबंदी, बाल-विवाह, खुले में शौच से मुक्ति सहित विभिन्न सामाजिक कुरीतियों को खत्म करने की दिशा में निरंतर चलाए जा रहे जन-जागरूकता अभियानों का व्यापक असर अब दिखने लगा है। इससे सामाजिक कुरीतियों को खत्म करने में मदद मिल रही है। इसी प्रकार स्वास्थ्य-पोषण एवं स्वच्छता के बारे में उन्हें जागरूक एवं प्रशिक्षित करते हुए उनके व्यवहार में परिवर्तन लाया जा रहा है। इससे बीमारियों को दूर भगाकर परिवार को स्वस्थ एवं खुशहाल बनाने में मदद मिली है।

पहले घर की चहारदीवारी तक सीमित रहने वाली इन महिलाओं ने अब अपनी राजनीतिक ताकत को पहचानते हुए इस क्षेत्र में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। अब वे राजनीतिक रूप से जागरूक हुई हैं, संगठित हुई हैं और अपने अधिकारों के प्रति काफी मुखर हुई हैं। परिणामस्वरूप सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में इनकी आवाज सुनी जाने लगी है। लोकतंत्र को मजबूत करने की दिशा में पहल करते हुए इसमें अपनी भागीदारी भी सुनिश्चित की है। समाज के विकास में इनकी बढ़ती भागीदारी की वजह से जीविका दीदियों पर लोगों का विश्वास बढ़ा है। अब वे न केवल अपने परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में साझेदार बनी हैं बल्कि अपने घर की ड्योढ़ी को लाँघकर वे अपने गाँव-समाज को नेतृत्व भी प्रदान कर रही हैं। वे समाज को नई दिशा प्रदान कर विकास का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। लिहाजा उन्हें अपने क्षेत्र में राजनीतिक नेतृत्व करने का अवसर मिला है। उनके द्वारा किये जा रहे उत्कृष्ट कार्यों की बदौलत उन्होंने पंचायत चुनाव में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराते हुए कामयाबी हासिल की है। यही कारण है कि पंचायती राज व्यवस्था के तहत आज वार्ड सदस्य, पंच, सरपंच, पंचायत समिति, मुखिया और जिला परिषद सदस्य जैसे तमाम पदों पर आज काफी संख्या में जीविका दीदियाँ काबिज हुई हैं। इतना ही नहीं पंचायत प्रतिनिधि के तौर पर अपनी राजनीतिक भागीदारी को वे पूरी जिम्मेवारी के साथ निभा रही हैं। अपने उत्कृष्ट कार्यों से उन्होंने यह साबित किया है कि महिलाएं आज किसी भी क्षेत्र में किसी से कम नहीं हैं। बहरहाल बिहार में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन की दिशा में जीविका दीदियों ने मौन क्रांति का आगाज किया है।

### जीविका दीदियों की बढ़ी राजनीतिक पहचान :-

लखीसराय जिले में जीविका दीदियों की बढ़ती राजनीतिक ताकत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जिला अंतर्गत दो विधान सभा क्षेत्रों में कुल 244 जीविका दीदियाँ पंचायत प्रतिनिधि के तौर पर चुनी गई हैं। लखीसराय जिला अंतर्गत सूर्यगढ़ा प्रखंड स्थित हल्दी गाँव की रहने वाली श्रीमती शबाना आजमी का नाम भी इसी श्रेणी में शुमार है। इन्होंने जीविका मित्र के रूप में अपने सफर की शुरुआत की थी। लेकिन आज वह एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपनी पहचान रखती है। समूह के माध्यम से ही वह सामाजिक कार्यों से जुड़ी। धीरे-धीरे सामाजिक कार्यों में उनकी रुचि और सक्रियता बढ़ने लगी। उनके कार्यों और जज्बे को देखते हुए जीविका दीदियों ने उन्हें वर्ष 2022 के वार्ड चुनाव में वार्ड आयुक्त के लिए प्रत्याशी बनाया। जीविका दीदी के रूप में मिली पहचान एवं इनके द्वारा चलाये गए विभिन्न जन-जागरूकता अभियानों की बदौलत शबाना आजमी हल्दी गांव के वार्ड नंबर- 7 से वार्ड आयुक्त का चुनाव जीत गई। शबाना अब अपने समाज को नेतृत्व प्रदान करते हुए अपने वार्ड के विकास का मार्ग प्रशस्त कर रही है। आने वाले दिनों में शबाना आजमी नगर पालिका से आगे बढ़ते हुए जिला स्तरीय चुनाव में अपनी सामाजिक एवं राजनीतिक भागीदारी पेश करने को तैयार है।

### केस-3

### Courageous Convictions, Lasting Impact

## Unravelling the Tale of a Social Change Agent



Marut Nandan, YP-KMC, Patna

Sudha Kumari, a remarkable individual residing in Dhanarua Block, Bihar, has emerged as a beacon of hope and empowerment in her community. At the age of 33, Sudha has embarked on a journey fueled by determination and a profound commitment to driving social change. Despite marrying soon after completing her education in Geography honours in 2009 and becoming a mother to three daughters, Sudha's passion for making a difference in her community remained unwavering. Her journey with JEEVIKA, a pioneering organization focused on empowering women in rural Bihar, has been marked by remarkable achievements and relentless dedication to the cause of gender equality.





## **Sudha's Journey with JEEVIKA:**

In 2018, Sudha joined JEEVIKA as a member of the Lakshmi JEEVIKA Swayam Sahayata Samuh, a part of the Gayatri JEEVIKA Mahila Gram Sangathan and Koshish Cluster Level Federation. Initially, she actively participated in weekly meetings, eager to contribute to community development initiatives. However, Sudha's determination and leadership qualities soon caught the attention of her peers and JEEVIKA facilitators. In 2020, she was appointed as a Master Resource Person (MRP) in Health, Nutrition, and Sanitation (HNS), a role that would significantly shape her journey and impact within the community.

### **Trailblazing Initiatives in the Field:**

As an HNS-MRP, Sudha drew inspiration from her prior training with an NGO, where she gained expertise in health-related subjects. Witnessing the dire conditions and challenges faced by women in her community, Sudha was driven to initiate impactful interventions aimed at improving maternal and child health outcomes. Leveraging the Behaviour Change Communication (BCC) model, Sudha effectively disseminated information on proper nutrition, hygiene practices, and maternal healthcare to women within Community Based Organizations (CBOs). Her efforts yielded tangible results, as evidenced by a positive shift in behaviors related to diet adherence and infant feeding practices.

Moreover, Sudha played a crucial role during the Covid-19 pandemic, working tirelessly to raise awareness about the importance of vaccination and preventive measures. Leading by example, Sudha was among the first to receive the Covid-19 vaccine, instilling confidence and trust among community members. Her proactive approach and dedication to community health significantly contributed to mitigating the impact of the pandemic in her area.

Transitioning into the role of Coordinator of Didi Adhikar Kendra (DAK), Sudha continued her crusade for gender equality and women's rights. Equipped with training in counseling and gender integration, Sudha emerged as a vocal advocate for survivors of domestic violence, child marriage, and other gender-based injustices. Through the establishment of DAK, Sudha provided a safe space for women to seek support, guidance, and legal assistance. Her unwavering commitment to justice and empowerment resulted in the resolution of numerous cases and the restoration of dignity and hope to survivors.

### **Recent Achievements and Recognition:**

Sudha's tireless efforts and impactful contributions have garnered widespread recognition and acclaim. Recently, she was invited by the Ministry of Rural Development, Government of India, to serve as one of the anchors of the inaugural event of the Nayi Chetna 2.0 initiative under the DAY\_NRLM against Gender-Based Violence. Her advocacy for gender integration programs and unwavering support for survivors have earned her accolades and admiration from her peers and community members alike. Sudha's appearance as a guest on the Morning India Show at DD Bharti further amplified her message of empowerment and social justice, reaching a wider audience and inspiring others to join the movement for change.

### **Conclusion:**

Sudha Kumari's journey from a dedicated member of a self-help group to a trailblazing advocate for gender equality and community empowerment exemplifies the transformative power of grassroots initiatives. Through her unwavering commitment, resilience, and leadership, Sudha has not only improved the lives of countless women and children in her community but has also inspired a new generation of change-makers. Her story serves as a testament to the potential for positive change within rural communities and underscores the importance of empowering individuals like Sudha to drive social transformation. As Sudha continues her journey, her legacy of empowerment and advocacy will continue to inspire and uplift communities for generations to come.



# बड़की दीदी

प्रबंधन सूचना प्रणाली

बड़की दीदी

बड़की दीदी अपने काम से लौट ही रही थीं कि उनकी नजर पास ही चल रही स्वयं सहायता समूह की बैठक पर पड़ी। बड़की दीदी बैठक में जाती हैं और सभी सदस्यों से बात करने लगती हैं।









# मन की कलम से



## रचना आमंत्रण



जीविका द्वारा 'चेंजमेकर्स' (द्विभाषीय - त्रैमासिक) पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका में जीविका सम्पादित गतिविधियों / कार्यक्रमों / सफलता की कहानियों के प्रकाशन के साथ ही विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे जीविका कर्मियों के अनुभवों को भी स्थान दिया जाता है। जीविका कर्मियों से आग्रह है कि वे जीविका से जुड़े अपने अनुभवों / सफलता की कहानियों / कविता / गतिविधियों आदि को 'चेंज मेकर्स' में प्रकाशन के लिए भेजें। रचना हिन्दी और अंग्रेजी या दोनों में से किसी भी भाषा में हो सकती है। रचना के साथ उससे संबंधित तस्वीरें अवश्य संलग्न हों। रचनाकार अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता और संपर्क नंबर का उल्लेख अवश्य करें। रचना को निम्न मेल आईडी पर भेज सकते हैं-

changemakers.brpl@gmail.com

प्रकाशन योग्य रचनाओं को रचनाकार के नाम के साथ पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा।

- संपादकीय टीम, चेंजमेकर्स ,

Threads of Progress:

### The Community MIS Symphony

In the realm where data flows,  
And systems hum with silent prose,  
There lies a beacon, strong and bright,  
Guiding communities towards the light.

A Management Information System, it's called,  
In every community, big or small,  
It weaves together threads of data's might,  
To streamline paths and futures bright.

Through its circuits, information surges,  
Connecting lives, bridging diverging urges,  
From tracking needs to fostering growth,  
It's the backbone of progress, we all betroth.

No longer lost in the labyrinth of confusion,  
With MIS, there's clarity, no illusion,  
Efficiency and effectiveness hand in hand,  
Empowering communities to take a stand.

With every entry and every query,  
It builds a narrative, bold and fiery,  
Of progress made and challenges met,  
A testament to resilience, we won't forget.

So here's to the Community MIS,  
A silent hero, bestowing bliss,  
In its digital embrace, we find,  
A future where unity and progress bind.

 Pawan Kumar Priyadarshi  
Project Manager-Communication



## • EVENTS

SHG Members from Bihar  
Visited Amrit Udyan, New Delhi  
on the occasion of  
International Women's Day



Community Participation in  
Republic Day  
Tableau presentation  
at Gandhi Maidan Patna



Felicitation of  
JEEVIKA SHG Members  
on the Occasion of  
International Women's Day 2024



JEEVIKA hosts  
6th Regional Review Meeting in Patna,  
driving impactful change and  
sustainable development in Bihar







# JEEVIKA

Rural Development Department, Govt. of Bihar  
Vidyut Bhawan - II, 1<sup>st</sup> & 3<sup>rd</sup> Floor, Bailey Road, Patna- 800 021  
Ph.: +91-612-250 4981 :: Fax: +91-612-250 4960,  
Website: [www.brlp.in](http://www.brlp.in) :: E-mail: [ceo@brlp.in](mailto:ceo@brlp.in)